एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

परंपरागत कृषि विकास योजना: एक अनूठी पहल

(*लक्षिता चौहान[1], डॉ. मनमीत कौर[2] एवं रमेश चन्द बुनकर[3])

[1]महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।

[2]स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान।

[3]भा. कृ. अनु. प.- राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा।

*संवादी लेखक का ईमेल पता: lakshitachouhan07@gmail.com

भारत एक कृषि प्रधान देश है, भारत की जैव विविधता एवं सांस्कृतिक संपन्नता पूरे विश्व में अतुलनीय है। पूर्व में किए गए कई अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि कृषि आजीविका निर्वहन का एक अभिन्न अंग रहा है। कृषि एक व्यवसाय ही नहीं है अपितु भारतीय कृषको के लिए यह उनकी संस्कृति है क्योंकि, वह भूमि को अपनी मां का दर्जा देते हैं तथा पूजते हैं। प्राचीन समय से मानव जनित हल एवं बैलों के द्वारा खेत को जोता जा रहा था परंतु जैसे-जैसे विज्ञान ने मानव जीवन में प्रवेश किया एवं "आवश्यकता आविष्कार की जननी है" मुहावरे को न्याय पूर्ण रूप से तर्कसंगत किया। धीरे-धीरे, समय बीतने के साथ ही मानव में लालसा बढ़ी, संतुष्टि घटी। वह कम समय में अत्यधिक लाभ अर्जित करने की इच्छा रखने लगा, जिसके फलस्वरूप विभिन्न प्रकार की मशीनरी उपकरण एवं रसायन का उपयोग होने लगा परंतु मानव की लालसा यहां कहां रुकने वाली थी, वह कम समय में अच्छे उत्पादन व लाभ की लालसा में ऐसे गर्त में जा धँसा जहां से बाहर निकलना अत्यंत ही कठिन था। लेकिन, यह तो प्रकृति का नियम है कि अति हमेशा ही नुकसानदायक होती है। रसायनों के अत्यधिक उपयोग से समस्या ने विकराल रूप ले लिया और मानव के शरीर पर रसायनों ने अपना दुष्प्रभाव छोड़ना शुरू कर दिया। मनुष्य एवं उसकी मां तुल्य भूमि को भी अत्यंत नुकसान पहुंचा। समय के साथ यह समस्या और भी भयावह रूप लेने लगी। वैज्ञानिकों के शोध निष्कर्षो से ज्ञात हुआ कि इस समस्या का जन्म मानव की लालसा से हुआ है, मनुष्य द्वारा रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से मृदा की उर्वरकता एवं उत्पादकता प्रभावित हुई है। तब से सरकार ने इस दिशा में कुछ अहम कदम उठाए जैसे की जैविक खेती को बढ़ावा देना वरसायनों के अत्यधिक उपयोग पर अंकुश लगाना। परंपरागत कृषि विकास योजना जैसी योजना के रूप में भी एक पहल की गई है। भारत में जैविक खेती की परंपरा प्राचीन काल से ही रही है। पूर्ण रूप से जैविक खादों पर आधारित फसल पैदा करना जैविक खेती कहलाता है। दुनिया के लिए भले ही यह नई तकनीक हो, लेकिन देश में परंपरागत रूप से जैविक खाद पर आधारित कृषि होती आई है जिसे जैविक खेती कहते हैं। जैविक खाद का इस्तेमाल करना देश में परंपरागत रूप से होता रहा है। भारत सरकार कृषि एवं सहकारिता विभाग द्वारा वर्ष 2015-16 में **परम्परागत कृषि विकास योजना (पी. के. वी.वाई.)** का शुभारम्भ किया गया है। इस योजना का उद्देश्य जैविक उत्पादों के प्रमाणीकरण और विपणन को प्रोत्साहन देना है।

पी. के.वी.वाई. का महत्व

जैविक खेती पर्यावरण व मानव के लिए जितनी लाभदायक है, उतनी ही किसानों की आर्थिक स्थिति के दृष्टिकोण से समस्याग्रस्त है । जब कोई किसान जैविक खेती अपनाता है, तो वह वर्षों से उपयोग करते आये हानिकारक रसायनों के दुष्प्रभाव से मृदा की उपजाऊ क्षमता कम हो जाती है। पी. के.वी. वाई.के द्वारा किसानों को 3 वर्षों तक 1500 रुपए प्रति वर्ष प्रदान किए जाते हैं तथा विभिन्न प्रकार के जैव उर्वरक व केंचुए की खाद भी दी जाती है। उत्पाद कीटनाशक अवशेषों से मुक्त होगा और उपभोक्ता के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में योगदान देगा। यह किसानों की आय बढ़ाएगा और व्यापारियों के लिए संभावित बाजार तैयार करेगा। यह किसानों को इनपुट उत्पादन के लिए प्राकृतिक संसाधन जुटाने के लिए प्रेरित करेगा।पी. जी. एस.- इंडिया कार्यक्रम के तहत भागीदारी गारंटी प्रणाली परम्परागत कृषि विकास योजना के तहत मिट्टी की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए मौलिक दृष्टिकोण होगा। जैविक खेती के अभ्यास के पीछे का सिद्धांत कृषि प्रणाली में जैविक चक्र को प्रेरित करना और बढ़ाना है, गहरी जड़ें मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाना, प्रदूषण में कमी, भोजन में आनुवंशिक विविधता को संरक्षित करना और कीटनाशक व उर्वरकों के उपयोग से बचना है।

सरकार द्वारा पी. के.वी.वाई. हेतु किए गए प्रयास

सन् 2004-05 में जैविक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय जैविक खेती परियोजना (एन.पी.ओ.एस.) शुरू करने के पश्चात भारत में जैविक खेती की तरफ ध्यान आकर्षित किया गया। सरकार के प्रयासों से विभिन्न योजनाएं चलाई गई। उनमें से एक सन् 2015 में केंद्र सरकार द्वारा परंपरागत कृषि विकास योजना (पी.के.वी. वाई.) भी चलाई गई। पी. के. वी. वाई., राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (एन. एम. एस. ए.) के तहत मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन (एस. एच. एम.) योजना का एक घटक है, जिसका उद्देश्य दीर्घकालिक मिट्टी की उर्वरता निर्माण एवं संसाधन सुनिश्चित करने के लिए पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के सम्मिश्रण के माध्यम से जैविक खेती के स्थाई मॉडल को विकसित करना है। यह संरक्षण जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और संबंध में भी मदद करता है इसका मुख्य उद्देश्य मृदा की उर्वरता को बढ़ाना और कृषि रसायनों के उपयोग के बिना जैविक उत्पादों के माध्यम से स्वस्थ भोजन के उत्पादन में मदद करना है।

पी. के.वी.वाई.के उद्देश्य

इसका उद्देश्य रसायन मुक्त कृषि उत्पादों का उत्पादन करना ही नहीं बल्कि पर्यावरण के अनुकूल कम लागत वाली तकनीक को अपनाकर जैविक खेती करना है। पी. के. वी. वाई. के क्रियाकलापों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- ग्रामीण युवाओं / किसानों / उपभोक्ताओं / व्यापारियों के बीच जैविक खेती को बढ़ावा देना
- जैविक खेती में नवीनतम तकनीकों का प्रसार करना
- भारत में सार्वजनिक कृषि अनुसंधान प्रणाली से विशेषज्ञों की सेवाओं का उपयोगलेना
- एक गांव में कम से कम एक समूह प्रदर्शन का आयोजन करना।

पी. के. वी. वाई. के क्रियान्वयन के पद

- किसानों के समूहों को परम्परागत कृषि विकास योजना के तहत जैविक खेती शुरू करने के लिए प्रेरित किया जायेगा। इस योजना के तहत जैविक खेती का काम शुरू करने के लिए 50 या उससे ज्यादा ऐसे किसान एक क्लस्टर बनायेंगे, जिनके पास 50 एकड़ भूमि होगी। इस तरह तीन वर्षों के दौरान जैविक खेती के तहत 10,000 क्लस्टर बनाये जायेंगे, जो 5 लाख एकड़ के क्षेत्र को कवर करेंगे।

- प्रमाणीकरण पर व्यय के लिए किसानों पर कोई भार/ दायित्व नहीं होगा।
- फसलों की पैदावार के लिए, बीज खरीदने और उपज को बाजार में पहुंचाने के लिए हर किसान को तीन वर्षों में प्रति एकड़ 20,000 रुपये दिए जायेंगे।
- परंपरागत संसाधनों का उपयोग करके जैविक खेती को प्रोत्साहित किया जाएगा और जैविक उत्पादों को बाजार के साथ जोड़ा जाएगा।
- यह किसानों को शामिल करके घरेलू उत्पादन और जैविक उत्पादों के प्रमाणीकरण को बढ़ाएगा।

पी. के. वी.वाई. के लाभ

जैविक खेती में किसान रसायनों का उपयोग ना करते हुए फसल उत्पादन करता है। जिससे वह मृदा स्वास्थ्य का ध्यान रखता है जो कि पर्यावरण के प्रति भी अच्छा रहता है। रसायनों को जब किसान खेतों में छिड़कता है तो वह उन रसायनों का कुछ भाग फसल में ही रह जाता है, जिसे व्यक्ति ग्रहण करता है और रसायनों के दुष्प्रभाव से विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रसित हो जाता है। मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण तथा मृदा स्वास्थ्य पर भी रसायन प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति में कमी आ गई। पी. के.वी.वाई.के द्वारा सरकार किसानों को जागरूक करने का प्रयास कर रही है जिससे कि किसान रसायनों का कम उपयोग कर बेहतर उत्पाद प्राप्त कर सकें।

निष्कर्ष

परंपरागत कृषि विकास योजना जैसी सरकार द्वारा ली गई पहल पर्यावरण तथा भावी पीढ़ी दोनों के लिए ही अच्छी है। यदि हम हमारे आज को बचाएंगे तो ही हमारा कल सुरक्षित रहेगा। वर्तमान में रसायनों के दुष्प्रभाव से मनुष्य विभिन्न प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हो रहा है, उनमें से कुछ तो लाइलाज है यदि मनुष्य रसायनों का उपयोग करना छोड़ दें तो इस समस्या का निराकरण संभव है। परंतु, यह बहुत ही कठिन होगा तथा समय भी काफी ज्यादा लगेगा। हमारी जनसंख्या को देखते हुए भी यह काफी मुश्किल है क्योंकि इतनी विशालकाय जनसंख्या की खाद्य आपूर्ति बड़ी बात है। यह केवल सरकार का ही नहीं बल्कि आम जनता का भी कर्तव्य होना चाहिए कि वह इस दिशा में अपना योगदान दे तथा इस कहावत को सत्य करें कि हर अच्छे कार्य का शुभारंभ अपने खुद के घर से होना चाहिए ठीक वैसे ही हर व्यक्ति अपने घर कीछतों पर किचन गार्डनिंग करें तथा कोशिश करें कि वह जैविक उत्पादों का ही उपयोग करें हालांकि, वह उत्पाद अन्य उत्पादों की तुलना में थोड़े महंगे होते हैं परंतु यह उनके भविष्य के लिए बेहतर विकल्प है।